Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Research Article

आधुनिक भारत के निर्माता – सरदार वल्लभभाई पटेल का कूटनीतिक और प्रशासनिक योगदान

राहुल कुमार *

सहायक प्रवक्ता, इतिहास विभाग, गुरु नानक खालसा कॉलेज अबोहर, पंजाब, भारत

Corresponding Author: *राहुल कुमार

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18755259

सारांश

यह शोध पत्र सरदार वल्लभभाई पटेल के उन प्रयासों का गहन विश्लेषण करता है, जिनके कारण भारत एक अखंड राष्ट्र बन सका। 1947 में भारत की स्वतंत्रता के समय देश के 562 टुकड़ों में बंटने का खतरा था। इस पत्र में पटेल की एकीकरण नीति, 'ऑपरेशन पोलो', भारतीय नौकरशाही के पुनर्गठन और संविधान निर्माण में उनकी भूमिका का परीक्षण किया गया है। यह अध्ययन सिद्ध करता है कि पटेल की यथार्थवादी सोच ने ही भारत को एक असफल राष्ट्र बनने से बचाया।

जीवन परिचय: भारत के पहले गृह मंत्री और उप प्रधान मंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल भारतीय राजनीति में प्रमुख व्यक्तित्व थे। सरदार पटेल का जन्म 31 अक्टूबर, 1875 को नडियाद, गुजरात में हुआ था. वह महात्मा गांधी के अहिंसा और एकता के सिद्धांतों से बहुत प्रभावित थे। उन्होंने आजादी के बाद रियासतों को भारत में मिलाने में अहम भूमिका निभाई। उनके योगदान के कारण उन्हें भारत के लौह पुरुष और भारत को एकजुट करने वाले जैसे विभिन्न खिताब दिलाए। उनके योगदान और संघर्ष के सम्मान में सरदार पटेल की जयंती, 31 अक्टूबर को "राष्ट्रीय एकता दिवस" या राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाया जाता है। 2018 में, दुनिया की सबसे ऊंची प्रतिमा, "स्टैच्यू ऑफ यूनिटी" उन्हें गुजरात में समर्पित की गई थी। मरणोपरांत, सरदार पटेल को 1991 में भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान, भारत रत्न से सम्मानित किया गया। दुखद बात यह है कि 1950 की गर्मियों में उनके स्वास्थ्य में तेजी से गिरावट आई, जिससे घातक दिल का दौरा पड़ा। भारत के इतिहास और एकता पर अमिट प्रभाव छोड़ते हुए 15 दिसंबर 1950 को उनका निधन हो गया।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2584-184X
- **Received:** 02-12-2025
- **Accepted:** 22-02-2026
- **Published:** 24-02-2026
- **MRR:**4(2); 2026: 383-385
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

राहुल कुमार. आधुनिक भारत के निर्माता – सरदार वल्लभभाई पटेल का कूटनीतिक और प्रशासनिक योगदान. इंडियन जर्नल ऑफ मॉडर्न रिसर्च रिव्यू. 2026;4(2):383-385.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मुख्य शब्द: कूटनीति, ब्रिटिश शासन, प्रशासन, भारतीय स्वतंत्रता, एकीकरण, लोहपुरुष।

© 2026 राहुल कुमार. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रस्तावना

15 अगस्त 1947 को ब्रिटिश शासन के अंत के साथ भारत को स्वतंत्रता तो मिली, लेकिन विरासत में विभाजन की त्रासदी और 562 स्वतंत्र देशी रियासतें भी मिलीं। 'भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947' ने रियासतों को यह छूट दी थी कि वे भारत या पाकिस्तान में से किसी एक को चुनें या स्वतंत्र रहें।

यह स्थिति भारत के लिए अत्यंत खतरनाक थी। यदि ये रियासतें अलग रहतीं, तो भारत का मानचित्र 'छलनी' जैसा होता, जहाँ एक राज्य से दूसरे राज्य में जाने के लिए वीजा की आवश्यकता पड़ती। इस पृष्ठभूमि में, सरदार पटेल ने रियासती मंत्रालय (Ministry of States) का कार्यभार संभाला। उनका उद्देश्य स्पष्ट था: "भारत का पूर्ण क्षेत्रीय और प्रशासनिक एकीकरण।"

खोज विधि

इस पत्र को लिखने के लिए ऐतिहासिक विधि का प्रयोग किया है, डेटा को मुख्य रूप से जाने-माने विद्वानों की लिखी किताबों और अलग-अलग नेशनल और इंटरनेशनल जर्नल्स में लिखे गए आर्टिकल्स, पर फोकस करके लिखा गया है। इस पेपर को लिखने के लिए सेकेंडरी डेटे का इस्तेमाल किया गया है।

एकीकरण की रणनीति: साम, दाम, दंड और भेद

सरदार पटेल और उनके सचिव वी.पी. मेनन ने एकीकरण के लिए एक मनोवैज्ञानिक और कूटनीतिक रणनीति तैयार की।

1. देशभक्ति की अपील और 'प्रिवी पर्स'

पटेल ने राजाओं को यह एहसास दिलाया कि एक मजबूत भारत में ही उनकी सुरक्षा निहित है। उन्होंने राजाओं को उनके पद और सम्मान के बदले 'प्रिवी पर्स' (शाही भत्ता) देने का वादा किया। उन्होंने केवल तीन विषयों—रक्षा, विदेशी मामले और संचार—को भारत सरकार को सौंपने की मांग की।

2. समय सीमा का दबाव

पटेल ने स्पष्ट कर दिया था कि 15 अगस्त 1947 के बाद शर्तें बदल सकती हैं और तब सरकार इतनी उदार नहीं होगी। उनके व्यक्तित्व का प्रभाव ऐसा था कि अधिकतर राजाओं ने समय रहते 'विलय पत्र' पर हस्ताक्षर कर दिए।

प्रमुख केस स्टडीज: कठिन रियासतों का विलय

तीन रियासतों जूनागढ़, हैदराबाद और कश्मीर ने भारत में शामिल होने से इनकार कर दिया था। पटेल ने यहाँ अलग-अलग रणनीतियां अपनाईं।

1. जूनागढ़: जनमत का विजय

समस्या: जूनागढ़ (गुजरात) के नवाब ने पाकिस्तान में विलय की घोषणा की, जबकि वहाँ की 80% जनता हिंदू थी और भारत के साथ रहना चाहती थी।

पटेल की कार्रवाई: पटेल ने जूनागढ़ की सीमाओं को सील कर दिया और आर्थिक नाकाबंदी की। नवाब पाकिस्तान भाग गया।

परिणाम: पटेल ने वहां जनमत संग्रह कराया, जिसमें 99% लोगों ने भारत के पक्ष में मतदान किया।

2. हैदराबाद: 'ऑपरेशन पोलो' (1948)

समस्या: हैदराबाद भारत की सबसे बड़ी रियासत थी। निज़ाम उस्मान अली खान स्वतंत्र रहना चाहते थे। उनकी निजी सेना 'रजाकारों' ने हिंदुओं पर अत्याचार करना शुरू कर दिया।

पटेल का निर्णय: लॉर्ड माउंटबेटन और नेहरू बातचीत के पक्षधर थे, लेकिन पटेल जानते थे कि "कैंसर का इलाज सर्जरी है।"

कार्रवाई: 13 सितंबर 1948 को पटेल ने 'पुलिस कार्रवाई' (Operation Polo) का आदेश दिया।

परिणाम: केवल 108 घंटों में भारतीय सेना ने हैदराबाद पर नियंत्रण कर लिया और निज़ाम ने आत्मसमर्पण कर दिया।

3. लक्षद्वीप और रणनीतिक दूरदर्शिता

यह एक कम चर्चित तथ्य है। पटेल ने स्वतंत्रता के तुरंत बाद मुदलियार बंधुओं को पुलिस बल के साथ लक्षद्वीप भेजा। जैसे ही वहां भारतीय झंडा फहराया गया, उसके कुछ ही घंटों बाद पाकिस्तानी जहाज वहां पहुंचे, लेकिन उन्हें वापस लौटना पड़ा। पटेल की इस तत्परता ने भारत के महत्वपूर्ण समुद्री क्षेत्र को बचाया।

'स्टील फ्रेम' का निर्माण: प्रशासनिक दृष्टि

सरदार पटेल को 'All India Services' (AIS) का जनक माना जाता है।

आईसीएस (ICS) का बचाव: स्वतंत्रता के बाद, कई नेता आईसीएस अधिकारियों को "अंग्रेजों के एजेंट" मानते थे। नेहरू भी नौकरशाही को लेकर बहुत सकारात्मक नहीं थे।

पटेल का तर्क: संविधान सभा में पटेल ने कहा, "बिना 'स्टील फ्रेम' (इस्पाती ढांचे) के यह देश बिखर जाएगा। मुझे ऐसे अधिकारी चाहिए जो निडर होकर अपनी राय दे सकें।"

IAS/IPS की स्थापना: उन्होंने पुराने ICS को IAS (भारतीय प्रशासनिक सेवा) में बदला और पुलिस सेवा को IPS बनाया। आज भारत का प्रशासन उन्हीं के बनाए ढांचे पर चल रहा है।

संविधान निर्माण और धर्मनिरपेक्षता

संविधान सभा में पटेल का योगदान केवल एकीकरण तक सीमित नहीं था।

मौलिक अधिकार: वे मौलिक अधिकारों पर बनी सलाहकार समिति के अध्यक्ष थे।

© 2026 राहुल कुमार. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

अल्पसंख्यक अधिकार: उन्होंने पृथक निर्वाचक मंडल को समाप्त किया, जो अंग्रेजों की 'फूट डालो और राज करो' की नीति का हिस्सा था। उन्होंने इसे राष्ट्र की एकता के लिए जहर बताया।

सोमनाथ मंदिर: पटेल ने सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण का बीड़ा उठाया। उनका मानना था कि यह धार्मिक कट्टरता नहीं, बल्कि भारत के सांस्कृतिक स्वाभिमान की पुनर्स्थापना है।

विदेश नीति और चीन पर चेतावनी

सरदार पटेल की भू-राजनीतिक समझ पंडित नेहरू से अधिक यथार्थवादी थी।

चीन के प्रति दृष्टिकोण: 1950 में अपनी मृत्यु से ठीक एक महीने पहले, पटेल ने नेहरू को एक विस्तृत पत्र लिखा था।

चेतावनी: उन्होंने चेतावनी दी थी कि "चीन पर भरोसा नहीं किया जा सकता।" उन्होंने तिब्बत पर चीन के कब्जे को भारत की सुरक्षा के लिए खतरा बताया था। दुर्भाग्यवश, उनकी इस सलाह की अनदेखी की गई, जिसका परिणाम 1962 के युद्ध में देखने को मिला।

निष्कर्ष

सरदार वल्लभभाई पटेल भारत के इतिहास में एक ऐसे स्तंभ हैं, जिनके बिना आधुनिक भारत की कल्पना असंभव है।

भौगोलिक निर्माता: उन्होंने भारत के मानचित्र को वह स्वरूप दिया जो आज हम देखते हैं।

प्रशासनिक निर्माता: उन्होंने देश को एक मजबूत नौकरशाही दी।
वैचारिक निर्माता: उन्होंने राष्ट्रवाद को तुष्टीकरण से ऊपर रखा।
जर्मनी के एकीकरण में जो भूमिका 'बिस्मार्क' ने निभाई थी, उससे कहीं अधिक कठिन और विस्तृत कार्य पटेल ने भारत में किया। इसीलिए, 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' केवल उनकी प्रतिमा नहीं, बल्कि उनके द्वारा बनाए गए अखंड भारत का प्रतीक है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिंह, एन. (एड.). (2010). नेहरू-पटेल एग्रीमेंट विदइन डिफरेंसेस: सिलेक्ट डॉक्यूमेंट्स और कॉरेस्पोंडेंस 1933-1950. नेशनल बुक ट्रस्ट.
2. सिंह, RNP. (2018). सरदार पटेल: मॉडर्न इंडिया को एकजुट करने वाले. वितस्ता पब्लिशिंग प्राइवेट लिमिटेड.
3. गोराडिया, पी. (2020). अगर पटेल प्राइम मिनिस्टर होते. वितस्ता पब्लिशिंग प्राइवेट लिमिटेड.
4. बालासुब्रमण्यम, टी. और वेंकटरमण, वी. (2020). सरदार वल्लभ भाई पटेल एन –एनालिसिस.इंडियन जर्नल ऑफ नेचुरल साइंसेज, 10(62), 27982-27989.
5. बालासुब्रमण्यम, टी. और बालू, ए. (2021). सरदार वल्लभ भाई पटेल अचीवमेंट्स और पॉलिटिकल स्टडीज, डोगो रंगसांग रिसर्च जर्नल, 11(1), 167-175.
6. एक भारत श्रेष्ठ भारत- सरदार पटेल की विरासत को आगे ले जाना। (27 अक्टूबर, 2020),ईस्टर्न मिरर।
7. भारत को 'श्रेष्ठ भारत' बनाना सरदार पटेल को सच्ची श्रद्धांजलि (31 अक्टूबर 2019)बिज़नेस स्टैंडर्ड
8. मेनन, वी.पी. (1956). The Story of the Integration of the Indian States. ओरिएंट लॉन्गमैन.
9. गांधी, राजमोहन (1991). Patel: A Life. नवजीवन पब्लिशिंग हाउस.
10. दास, दुर्गा (1969). India from Curzon to Nehru and After.

Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–NonCommercial–NoDerivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.

About the corresponding author

राहुल कुमार गुरु नानक खालसा कॉलेज, अबोहर (पंजाब) के इतिहास विभाग में सहायक प्रवक्ता हैं। वे आधुनिक भारतीय इतिहास, सामाजिक आंदोलनों और क्षेत्रीय इतिहास के अध्ययन में विशेष रुचि रखते हैं। शोध एवं अध्यापन के माध्यम से वे विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन और ऐतिहासिक दृष्टि के विकास के लिए प्रतिबद्ध हैं।

© 2026 राहुल कुमार. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/